**PART 1: HINDI VERSION**

# 1535 ई. चित्तौड़गढ़ साका: जब पाडण पोल पर देवलिया रावत बाघसिंह बहादुर शाह की फ़ौज के लिए काल बन गए!

चित्तौड़गढ़ के दूसरे साके और देवलिया रावत बाघ सिंह की अमर शहादत का प्रामाणिक ऐतिहासिक आलेख

AUTHOR: GOVIND MALVIYA (REAL HI STORY) | DATE: 2ND AUGUST 2026

> "पाडण पोल के संकरे ढलान पर जहाँ सुल्तान का ऑटोमन तोपखाना खामोश हो गया, वहाँ तलवारों की जगह कटारों ने ली और शहादत अमर इतिहास बन गई।"

## 1. भूमिका: इतिहास का वह पन्ना जो समय की धूल में दब गया

जब भी भारत के वीर इतिहास और मेवाड़ के स्वाभिमान की बात होती है, तो जनमानस के दिमाग में 1303 ई. का पहला साका (रावल रतन सिंह और रानी पद्मिनी) या 1568 ई. का तीसरा साका (जयमल-पत्ता और अकबर का आक्रमण) कौंध जाता है। लेकिन 1535 ई. में हुआ **चित्तौड़ का दूसरा साका** भारतीय इतिहास का एक ऐसा रोंगटे खड़े कर देने वाला अध्याय है, जहाँ एक तरफ़ गुजरात सल्तनत के तोपखाने का भयंकर तांडव था, तो दूसरी तरफ देवलिया (प्रतापगढ़) के रावत बाघसिंह की वह अटूट स्वामीभक्ति और अदम्य शौर्य, जिसने सुल्तान बहादुर शाह की फ़ौज के पसीने छुड़ा दिए थे।

## 2. बहादुर शाह का विश्वासघात: शरण का बदला कत्लेआम से

इतिहास के पन्नों को थोड़ा पीछे पलटें, तो 1526–1527 ई. के आसपास गुजरात का शहज़ादा बहादुर शाह अपने भाई सुल्तान सिकंदर के डर से जान बचाकर मेवाड़ भागा था। उस समय मेवाड़ की गद्दी पर पराक्रमी महाराणा संग्राम सिंह (महाराणा सांगा) विराजमान थे। राजपूतों की 'शरणागत रक्षण' की प्राचीन परंपरा का पालन करते हुए महाराणा सांगा ने बहादुर शाह को मेवाड़ में शरण दी, उसकी सुरक्षा का आश्वासन दिया और एक सम्मानित अतिथि की तरह रखा।

लेकिन 1527 ई. में खानवा के युद्ध के बाद जब महाराणा सांगा का देहांत हो गया और मेवाड़ की सत्ता में अस्थायी अस्थिरता आई, तो उसी बहादुर शाह ने—जिसने कभी मेवाड़ की शरण में अपनी जान बचाई थी—1533 ई. और फिर 1535 ई. में विशाल सेना के साथ चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण कर दिया। जिस कुल ने उसे आश्रय दिया था, उसी कुल को मिटाने के लिए वह आतुर हो उठा।

## 3. चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी और रूमी ख़ान का घातक तोपखाना

1535 ई. की शुरुआत में सुल्तान बहादुर शाह ने चित्तौड़गढ़ को चारों तरफ से घेर लिया। इस बार सुल्तान अकेला नहीं था; उसके पास उसका तुर्की तोपची **रूमी ख़ान (Rumi Khan)** और उसका अत्याधुनिक ऑटोमन तोपखाना था।

रूमी ख़ान की तोपों ने चित्तौड़गढ़ की मजबूत पत्थरों की प्राचीर (सुरक्षा दीवार) पर बारूद के गोले बरसाने शुरू कर दिए। उसने बारूद की सुरंगें (Mines) बिछाकर किले के 'जीवंत-मंत्र' और बुर्जों को उड़ाना शुरू कर दिया। किले के अंदर राशन-पानी समाप्त हो रहा था और बाहर तोपों की गूंज थी।

इस संकट की स्थिति में राजपूत सरदारों ने एक कूटनीतिक फैसला लिया। महाराणा सांगा के अल्पवयस्क पुत्रों (विक्रमादित्य और उदय सिंह) को सुरक्षित बूंदी भेज दिया गया ताकि मेवाड़ का राजवंश और भविष्य सुरक्षित रहे। अब सवाल यह था कि किले का नेतृत्व कौन करेगा और 'मेवाड़ का मुकुट और छत्र' कौन धारण करेगा?

## 4. देवलिया रावत बाघसिंह: मेवाड़ के मुकुट का उत्तरदायित्व

इस विकट परिस्थिति में **देवलिया (प्रतापगढ़)** के सिसोदिया (सूरजमलौत) शासक **रावत बाघसिंह** आगे आए। वे महाराणा क्षेत्रसिंह के पुत्र राणा खेमा (खेमकरण) के वंशज थे।

मेवाड़ के सभी सरदारों की सहमति से **रावत बाघसिंह को 'मेवाड़ का छत्र और मुकुट' सौंपा गया** और उन्हें चित्तौड़गढ़ दुर्ग का कार्यवाहक सेनापति व शासक नियुक्त किया गया। रावत बाघसिंह भली-भांति जानते थे कि तोपखाने के सामने पारंपरिक युद्ध की सीमाएं हैं, और अंत निश्चित है। लेकिन उन्होंने पीछे हटने के बजाय इतिहास का सबसे खौफनाक और आक्रामक प्रतिरोध दर्ज करने का फैसला किया।

## 5. 5 मार्च 1535: जौहर की ज्वाला और पाडण पोल का महाकत्लेआम

**5 मार्च 1535 ई.** का वह ऐतिहासिक और वीभत्स दिन आया।

- **अग्नि में जौहर:** महारानी कर्मावती के नेतृत्व में राजपूत वीरांगनाओं ने जौहर कुंड की प्रज्वलित अग्नि में आत्मदाह कर अपने स्वाभिमान की रक्षा की।
- **पाडण पोल का मोर्चा:** जौहर के बाद राजपूत योद्धाओं ने केसरिया वस्त्र धारण किए, हाथों में तलवारें और कटारें लीं, और चित्तौड़गढ़ के पहले मुख्य द्वार '**पाडण पोल**' के कपाट खोल दिए।

### रणनीतिक बुद्धि और भयंकर हाथापाई (Hand-to-Hand Combat):

पाडण पोल का रास्ता संकरा और ढलानदार था। रावत बाघसिंह जानते थे कि खुले मैदान में रूमी ख़ान का तोपखाना उन्हें भून डालेगा। इसलिए उन्होंने गुजरात फ़ौज की अग्रिम पंक्ति (जिसमें तुर्क/ऑटोमन तोपची और पैदल सैनिक थे) को पाडण पोल के संकरे रास्ते में खींच लिया।

संकरे रास्ते में रूमी ख़ान की बड़ी तोपें बेकार साबित हुईं। इसके बाद शुरू हुआ इतिहास का सबसे भयानक और नग्न हाथापाई वाला युद्ध। फारसी और राजस्थानी स्रोतों के अनुसार, पाडण पोल की ढलान पर तलवारें चलाने तक की जगह नहीं बची थी। सैनिकों ने एक-दूसरे को कटारों से गोदा और नंगे हाथों से शत्रुओं की श्वास नलियां फाड़ दीं।

रावत बाघसिंह स्वयं पाडण पोल के दरवाजे पर काल बनकर डट गए। उन्होंने सुल्तान की सेना के अग्रिम दस्ते को वहीं काट फेंका। ज़मीन पर खून का ऐसा कीचड़ बन गया था कि सैनिक अपनी ही लाशों के ढेर पर फिसल रहे थे। रावत बाघसिंह तब तक लड़ते रहे जब तक कि उनका शरीर छलनी नहीं हो गया और अंततः वे उसी पाडण पोल की चौखट पर वीरगति को प्राप्त हुए।

📚 **प्रामाणिक ऐतिहासिक साक्ष्य (Authentic References):**

1. **वीर विनोद (भाग 2, खण्ड 1):** कविराजा श्यामलदास (पृष्ठ 27–29) — रावत बाघसिंह को मेवाड़ का छत्र सौंपने और पाडण पोल पर युद्ध का विवरण।
2. **उदयपुर राज्य का इतिहास (भाग 1):** डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा (पृष्ठ 398–399) — 1535 साके और शहादत का संपूर्ण वर्णन।
3. **Mewar and the Mughal Emperors:** Dr. G. N. Sharma (Page 45–46) — तोपखाने के खिलाफ राजपूतों की रणनीति का विश्लेषण।
4. **Mirat-i-Sikandari (फारसी स्रोत):** शेख सिकंदर (Tr. E.C. Bayley) (Page 372–373) — सुल्तान की सेना के भारी नुकसान की पुष्टि।

---

**PART 2: ENGLISH VERSION**

# 1535 Battle of Chittor: When Rawat Bagh Singh of Devalia Stood Like Death at Padan Pol!

*A Comprehensive Historical Account for Archival & Academic Reference*

AUTHOR: GOVIND MALVIYA (REAL HI STORY) | DATE: AUGUST 2, 2026

> *"In the narrow incline of Padan Pol, where heavy artillery fell silent, swords gave way to daggers, and courage became immortal."*

## 1. Introduction: A Forgotten Chapter of Supreme Valor

Whenever the historic fort of Chittorgarh is mentioned in mainstream narratives, discussions immediately lean toward the First Saka of 1303 (Rawal Ratan Singh & Rani Padmini) or the Third Saka of 1568 (Jaimal-Patta & Akbar). However, the **Second Saka of Chittorgarh in 1535 AD** remains one of the most brutal, authentic, and military-intense chapters in Indian history—a battle defined by the devastating Ottoman artillery of the Gujarat Sultanate on one side, and the fierce, uncompromising resistance of **Rawat Bagh Singh of Devalia (Pratapgarh)** on the other.

## 2. Sultan Bahadur Shah’s Betrayal: Ingratitude to Refuge

To understand the geopolitical backdrop of 1535 AD, one must look back to 1526–1527 AD. Sultan Bahadur Shah, then a fleeing prince of Gujarat, sought asylum in Mewar to escape the wrath of his brother, Sultan Sikandar. Maharana Sangram Singh (Rana Sanga), adhering to the sacred Rajput ethos of protecting those who seek refuge (*Sharanagat Raksha*), granted him safety, honor, and shelter.

However, following the demise of Rana Sanga after the Battle of Khanwa, Bahadur Shah returned this debt of life with utter betrayal. In 1533 and subsequently in **1535 AD**, Bahadur Shah marched upon Chittorgarh with a massive army, seeking to obliterate the very dynasty that had once saved his life.

## 3. The Siege of Chittor & Rumi Khan’s Ottoman Artillery

By early 1535, Bahadur Shah had completely encircled the citadel of Chittorgarh. He was backed by his formidable Ottoman artillery commander, **Rumi Khan**, who deployed heavy cannons and gunpowder mines.

Rumi Khan’s artillery began breaching the massive stone walls and bastions of the fort. Inside the fort, provisions were rapidly running out. Recognizing the strategic reality, the Rajput council made a crucial decision: the minor sons of Rana Sanga (Vikramaditya and Udai Singh) were safely escorted out to Bundi to ensure the survival of the Mewar royal lineage.

The supreme command of Chittorgarh and the symbolic **'Royal Crown and Umbrella of Mewar'** were then formally entrusted to **Rawat Bagh Singh of Devalia**.

## 4. Rawat Bagh Singh: Holding the Sacred Crown of Mewar

Rawat Bagh Singh belonged to the Surajmalot branch of the Sisodia dynasty of Devalia (Pratapgarh), direct descendants of Rana Khema (son of Maharana Kshetra Singh).

Knowing full well that open-field engagement against heavy artillery rendered traditional warfare suicidal and that death was imminent, Rawat Bagh Singh accepted the supreme command. He chose not to surrender or retreat, but to engineer one of the most brutal close-quarter defensive maneuvers in medieval warfare.

## 5. March 5, 1535: The Flame of Jauhar & The Massacre at Padan Pol

On **March 5, 1535 AD**, the tragic climax unfolded:

- **The Sacred Jauhar:** Under the leadership of Rani Karnavati, the Rajput women committed themselves to the sacred flames of Jauhar to preserve their honor.
- **The Saffron Stand at Padan Pol:** Dressed in saffron robes (*Kesariya*), the Rajput warriors unbolted the massive gates of the first entrance—**Padan Pol**.

```
                    [ THE CHOKE POINT STRATEGY ]
Wide Open Plain (Ottoman Guns) ----> Narrow Steep Slope (Padan Pol)
  [Cannons Effective] --------------> [Cannons Rendered Useless]
```

### Tactical Brilliance & Brutal Hand-to-Hand Combat

Recognizing that Rumi Khan’s cannons would annihilate them in an open field, Rawat Bagh Singh baited the vanguard of the Gujarat army (comprising Ottoman gunners and heavy infantry) into the narrow, steep incline of the Padan Pol gateway.

In this tight choke point, Rumi Khan’s heavy cannons became completely useless. What followed was a brutally visceral, hand-to-hand fight. According to Persian and Rajasthani historical records, the incline of Padan Pol became so congested that swords could barely be swung; warriors engaged with daggers (*Katar*) and bare hands, tearing at enemy throat passages.

Rawat Bagh Singh personally anchored the defense right at the threshold of Padan Pol. The battlefield turned into a slippery slope of blood where soldiers fell over piled corpses. Rawat Bagh Singh fought relentlessly until his body was pierced by multiple weapons, eventually attaining martyrdom at the gateway of Padan Pol.


📚 **Primary & Academic Historical References:**

1. **Veer Vinod (Vol. 2, Part 1):** Kaviraja Shyamaldas (Pages 27–29) — Details the conferment of Mewar's crown to Rawat Bagh Singh and his last stand at Padan Pol.
2. **Udaipur Rajya ka Itihas (Vol. 1):** Dr. G. H. Ojha (Pages 398–399) — Authoritative historical account of the 1535 Saka and Rawat Bagh Singh's martyrdom.
3. **Mewar and the Mughal Emperors:** Dr. G. N. Sharma (Pages 45–46) — Academic analysis of Rajput combat tactics at Padan Pol against Ottoman artillery.
4. **Mirat-i-Sikandari (Persian Primary Source):** Sheikh Sikandar (Tr. E.C. Bayley) (Pages 372–373) — Contemporary Persian chronicle confirming the extreme resistance encountered at Padan Pol.


## 6. Conclusion: The Eternal Cenotaph at Padan Pol

Even today, as visitors enter the Chittorgarh Fort through its first gateway, **Padan Pol**, they are greeted by the **Cenotaph (Chhatri) of Rawat Bagh Singh**.

The events of March 5, 1535, were not merely a military encounter; they represented the absolute pinnacle of loyalty, strategic grit, and supreme sacrifice. Rawat Bagh Singh of Devalia etched his name permanently in history, proving that when the honor of the motherland is at stake, true warriors stand as unstoppable forces of nature.

📜 **DISCLAIMER & COPYRIGHT NOTICE**

**Educational Disclaimer:** यह सामग्री और लेख प्राथमिक एवं अकादमिक ऐतिहासिक ग्रंथों (वीर विनोद, डॉ. ओझा, मीरात-ए-सिकंदरी) पर आधारित एक शैक्षणिक, आर्काइवल और सूचनात्मक प्रस्तुति है। इसका उद्देश्य किसी भी धर्म, समुदाय, जाति या ऐतिहासिक परंपरा की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है।

**Copyright Notice:** © 2nd August 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY). All Rights Reserved.
*Unauthorised re-uploading, copying, or commercial redistribution of this text and presentation without prior written consent is strictly prohibited. Prepared for Internet Archive / Archival Records.*

**Archival Tags:** #Chittorgarh #HistoryOfMewar #RawatBaghSingh #PadanPol #1535BattleOfChittor #RajasthanHistory #IndianHistory #RajputanaHistory #VeerVinod #RealHIStory #GovindMalviya #HistoryEducator #Pratapgarh #Devalia #MewarHistory #HistoryFacts #InternetArchive